आधुनिकता के सम्बंध में डॉ. रामविलास की मान्यताएँ

अश्विनी कुमार लाल
शोधार्थी कलकत्ता विश्वविद्यालय
हिंदी विभाग
मो. नं.-8013172069

डॉ.रामविलास शर्मा हिन्दी के उन महत्त्वपूर्ण साहित्येतिहास लेखकों में हैं, जिन्होंने रामचंद्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी की तरह हिन्दी साहित्येतिहास पर स्वतंत्र रूप से पुस्तकें नहीं लिखी,परंतु उनके विपुल लेखन में साहित्येतिहास के तत्त्व यत्र-तत्र भरे पड़े हैं I उनके चिंतन और लेखन में केवल साहित्येतिहास के तत्त्व ही नहीं मिलते, बल्कि इतिहास-दृष्टि की मौलिक उद्भावनाएँ भी समाहित हैं I

रामविलास शर्मा मूलतः मार्क्सवादी साहित्येतिहासकार हैं, इसीलिए उनके लेखन में मार्क्सवादी चिंतन गंभीरता से उभरकर आता है I यद्यपि उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा का कहीं पर भी अंधानुकरण नहीं किया,बल्कि उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा को भारतीय संदर्भ में व्यख्यायित किया है I इस संदर्भ डॉ. में रवि भूषण लिखते हैं " रामविलास जी ने अनेक स्थलों पर मार्क्स आलोचना की है ..मार्क्स के शब्दों के मंत्र – जाप करने वाले मार्क्सवादियों ने रामविलास जी को संशोधनवादी इसलिए भी कहा है कि उन्होंने मार्क्सवाद के अनेक सैद्धांतिक स्थापनाओं और मान्यताओं का खंडन किया था I रामविलास जी ने स्थापनाओं से अधिक महत्त्व विश्लेषण पद्धति को दिया I "1 डॉ शर्मा के सम्पूर्ण चिंतन के केंद्र में सामन्त विरोधी जनवादी विचारधारा है। उन्होंने इतिहास व साहित्य को परखने एवं मूल्यांकन के लिए प्राच्यवाद एवं उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि का सहारा लिया। यही कारण है कि जहां वे एक ओर उत्तर औपनिवेशिक दृष्टि को केन्द्र में रखकर यूरोप केन्द्रित इतिहास-दृष्टि का खण्डन करते हैं, तो दूसरी ओर प्राच्यवादी दृष्टि को केंद्र में रखकर इतिहास एवं साहित्य को देखने की विशुद्ध भारतीय दृष्टि देते हैं। इन सब के बावजूद हिन्दी साहित्य के सामाजिक आधार, राजनैतिक परिवर्तन, इतिहास के क्रमिक विकास तथा राष्ट्रीय चेतना पर पड़ने वाले साहित्य के प्रभाव को विश्लेषित करते हैं I डॉ. शर्मा का लेखन व्यापक 'कैनवास' को समेटे हुए है। उनके लेखन में साहित्य, इतिहास,आलोचना से लेकर भाषा - विज्ञान, दर्शन, समाज और राजनीतिके प्रश्नों को गंभीरता से उठाया गया है। डॉ. शर्मा ने मार्क्सवाद से साहित्य व इतिहास को देखने तथा परखने का दृष्टिकोण तो प्राप्त किया, परंतु उसकी व्याख्या वे भारतीय परिवेश एवं प्रतिमानों के आधार पर करते हैंI यही कारण है कि वे अपने समय के कई मार्क्सवादी लेखकों से भिन्न दिखलाई पड़ते हैं I

1857 की क्रान्ति भारत के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना है। भारत में जिस तरह से अंग्रेजों ने अधिकार किया था, उसे किसी भी तरह से तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता है। अंग्रेज इस समय आधुनिक भाषाओं में जातीय साहित्य की रचना आरम्भ होती है । समाज और साहित्य का आधुनिक काल १२वीं सदी से आरम्भ होता है । सामाजिक स्तर पर इसका लक्षण है। सामन्ती व्यवस्था का विघटन, व्यापारिक पूंजीवाद का विकास, नये सामाजिक -सम्बन्धों का प्रसार; साहित्यिक स्तर पर इसका लक्षण है सामन्त-विरोधी प्रवृत्तियों का उद्भव और प्रसार, नये मानवतावाद की प्रतिष्ठा । १२वीं सदी में शुरू होने वाली यह सामन्त-विरोधी क्रान्ति कई मंज़िलें पार कर चुकी है, पर वह अभी पूर्णत: सम्पन्न नहीं हुई । अंग्रेज़ी राज कायम होने के बाद सामन्त-विरोधी विकास निरंतर अवरुद्ध होता रहा है । भारत में जातियों के पूर्ण गठन और देश को आधुनिक राष्ट्र बनाने की समस्या अब भी बनी हुई है। इसका यह अर्थ नहीं है कि भारत में अभी तक आधुनिक युग की शुरुआत नहीं हुई ।"[2]भारत में केवल व्यापार करने के लिए आये थे, लेकिन यहाँ के राज्यों की दलगत राजनीति उन्हें कब्जा करने का मौका देती रही। अंग्रेज अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्य में सफल होते गये। उन्होंने जो सन्धियाँ, वादे, इकरारनामें यहाँ किए, उन्हें बराबर तोड़ा और गैरकानूनी, नाजायज तथा अन्यायपूर्ण तरीकों से अपना राज कायम किया। ये अंग्रेज यूरोप में चाहे जितने आधुनिक रहे हों, भारत में अपने औपनिवेशिक स्वार्थ के लिए उन्होंने रूढ़िवादी और प्रतिक्रियावादी तत्त्वों को बढ़ावा दिया। यहाँ के सामंत रूढ़ियों और प्रतिक्रियावाद के गढ़ थे। इन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों की सहायता की। रामविलास शर्मा का आधुनिकता संबंधी विश्लेषण साम्राज्यवाद विरोधी होने के साथ सामंत विरोधी भी है। उन्होंने लिखा हैं " मोटे रूप से १२वीं सदी को नई जातियों के निर्माण का प्रारम्भिक काल मान सकते हैं।

1857 की क्रान्ति निश्चित रूप से एक ओर शोषक अंग्रेजी राज के विरुद्ध जनता का संघर्ष था, तो दूसरी ओर प्रतिक्रियावादी तत्त्वों के विरुद्ध आधुनिकता की लड़ाई थी। भारत के अधिकतर साहित्यकार एवं इतिहासकार भारत में आधुनिक काल का आरम्भ अंग्रेजों के आगमन तथा इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति से जोड़कर देखते हैं। लेकिन खुद अंग्रेजों के यहाँ आधुनिकता का इस मशीनी उत्पाद या औद्योगिक क्रान्ति से कोई संबंध नहीं है। उन्होंने आधुनिकता का सम्बंध जातीय निर्माण और जातीय भाषा के विकास से जोड़ा है I डॉ. मैनेजर पाण्डेय का कहना है कि- "उनकी नई मान्यता यह है कि भारत में पूंजीवाद की आरम्भिक अवस्था

का आरंभ 12 वीं शताब्दी से होता है, यहीं से जातीय निर्माण और जातीय भाषाओँ का विकास भी शुरू होता है,यहीं से भारतीय समाज और भारतीय साहित्य के इतिहास का आधुनिक काल भी शुरू होता है I"[3] अब प्रश्न यह उठता है कि आधुनिकता का संबंध अंग्रेजी राज और मशीनी उत्पाद से नहीं है तो किस चीज से है? और भारत में इसकी शुरुआत कब से हुई? इस संदर्भ में रामाविलास शर्मा अपना निष्कर्ष यूरोपीय पुनर्जागरण के आधार पर देते हैं, जिसमें आधुनिकता जातीय भाषाओं के अभ्युदय और विकास से संबद्ध हैं। वे लिखते हैं- "आधुनिकता का आरम्भ जातीय निर्माण प्रक्रिया से मानना चाहिए। उसका एक लक्षण है किसी एक जनपद की भाषा का दूसरे जनपदों में व्यवहार। जिस भाषा और साहित्य के माध्यम से विभिन्न जनपदों के किसान एकताबद्ध होते हैं, उस भाषा और साहित्य को जातीय निर्माण की प्रक्रिया से सम्बद्ध करके देखना चाहिए। हिन्दी प्रदेश में सूरदास और तुलसीदास जैसे कवियों की भूमिका इसी परिप्रेक्ष्य में समझी जा सकती है।"[4]

डॉ. रामविलास शर्मा हिन्दी के उन महत्त्वपूर्ण आलोचकों में हैं, जिन्होंने साहित्येतिहास को नवीन एवं मौलिक दृष्टि से देखने का प्रयास किया I यही कारण है कि उन्होंने परंपरा से चली आ रही साहित्येतिहास की अवधारणा को चुनौती दिया तथा साहित्येतिहस के नवीन मानदंडों को सबके सामने रखा I बहुत से भारतीय विद्वान,आलोचक आधुनिक काल की शुरुआत 19वीं शताब्दी या उसके बाद से मानते हैं I कुछ आलोचक ऐसे भी हैं जो आधुनिकता की अवधारणा को नवजागरण,पुनर्जागरण एवं स्वाधीनता आंदोलन से जोड़ कर देखते हैं I यहाँ तक कि आलोचकों का ऐसा भी समुदाय है, जो आधुनिकता का संबंध अंग्रेजी राज से जोड़ कर देखता है I इस तरह के आलोचक यहाँ तक कह देते हैं कि यदि अंग्रेज़ न आए होते तो भारत में आधुनिकता का प्रवेश हुआ ही नहीं होता I ऐसे बुद्धिजीवियों की भारत में एक जमात है,जो अंग्रेजी राज के बिना समाज में परिवर्तन की कल्पना भी नहीं कर सकते। ऐसे बुद्धिजीवी इतिहासकारों की डॉ. शर्मा तीखी आलोचना करते हैं। उनका स्पष्ट मानना है कि भारत में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व आधुनिक काल की शुरुआत हो चुकी थी। वे आधुनिक काल का संबंध व्यापारिक पूंजीवाद से जोड़ कर देखते है, जिसकी शुरुआत 12वीं सदी से हो जाती है I डॉ. शर्मा इस बात से परिचित थे कि अंग्रेजों ने भारत का जितना हित नहीं किया, उससे कहीं ज्यादा अहित किया है। वे लिखते हैं - "भारत में अंग्रेजों ने यहां के व्यापार का नाश करके उद्योगीकरण की जड़ ही काट दी। पहले यहां का माल खरीदकर अपने यहाँ बेचते थे, फिर खुली होड़ के बदले कानून के सहारे यहाँ के व्यापार का गला घोंटने लगे। हिंदुस्तान में विलायती माल बिकने लगा तो इसलिए नहीं कि मशीनों से चलने वाले कारखानों के माल से यहाँ के दस्तकारों का बनाया हुआ माल महँगा पड़ता था या होड़ में ठहर न सकता था| .... इस तरह उन्होंने यहाँ के व्यापार का नाश किया, उद्योगीकरण के लिए व्यापार द्वारा पूँजी जी एकत्र की जाती थी,वह सिलसिला बंद कर दिया, भारतीय बाजार के विकास में बहुत बड़ी रुकावट डाली।"[5] हिन्दी साहित्येतिहास के लेखकों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को मूलतः तीन भागों में बाँट कर देखा (आदि,मध्य और आधुनिक) I परंतु इन तीनों कालों के सामाजिक आधार एवं उसके गठन का विवेचन नहीं किया I इस संदर्भ डॉ. शर्मा लिखते हैं " साहित्य का इतिहास लिखने वाले प्राचीनकाल,मध्यकाल और आधुनिक काल, इन तीन कालों की चर्चा करता है I इन तीनों कालों में सामाजिक गठन का रूप क्या था, इसका विवेचन नहीं करता।"[6] डॉ. शर्मा की मान्यता है कि भारतीय समाज के इतिहास में वैदिक काल से पहले का काल गण समाजों का काल है, वैदिक काल से 11वीं सदी तक सामंती समाज का काल है और 12 वीं सदी से सामंतवाद के विघटन तथा व्यापारिक पूंजीवाद के उदय के साथ आधुनिक काल आरम्भ होता है। डॉ शर्मा ने आधुनिक जातियों के निर्माण का संबंध आधुनिकता से जोड़कर देखा है। उन्होंने लिखा है कि" व्यापारिक पूंजीवाद का युग आधुनिक जातियों के निर्माण का युग है, व्यापारिक पूंजीवाद की शुरूआत इन जातियों के इतिहास की शुरूआत है। व्यापारिक पूंजीवाद के युग में जो भी साहित्य रचा जाता है, वह आधुनिक काल में रचा हुआ साहित्य है, उसमें प्रवृत्तियां धाराएं जो भी हों।"[7]

डॉ. शर्मा का मानना है कि हिन्दी साहित्येतिहास का नामकरण एवं काल – विभाजन का मूल आधार यूरोप से ग्रहण किया गया है I यही कारण है कि हिन्दी साहित्येतिहास का काल-विभाजन करते हुए रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल को मध्यकाल से अलग रखा I इस संदर्भ में डॉ. शर्मा लिखते हैं " यूरोप के इतिहासकार मध्यकाल का व्यवहार सामंती युग के लिए करते हैं I शुक्ल जी का मध्यकाल भी सामंती युग है और उनका आदिकाल भी इसी सामंती युग के अंतर्गत है I तब आदिकाल को मध्यकाल से क्यों अलग रखा जाय ? "[8] इस समस्या का हल आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने तरीके से करते है I उन्होंने शुक्ल जी के 'मध्यकाल' को नहीं अपनाया है I यद्यपि जब वे 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' (1940) में लिख रहें थे, तब उन्होंने 'मध्यकाल' शब्द का प्रयोग बेकायदे किया था I परंतु जब उन्हें ज्ञात हुआ कि 'मध्ययुग' शब्द हताश मनोवृत्ति का परिचायक है, तो उन्होंने इस शब्द को बाद में छोड़ दिया I यही कारण है कि उन्होंने जब 'हिन्दी साहित्य : उदद्भव और विकास' लिखा तो 'मध्यकाल' की जगह 'भक्तिकाल' शब्द का प्रयोग किया I 'मध्यकाल' शब्द की व्याख्या करते हुए द्विवेदी जी लिखते हैं " 'मध्ययुग' शब्द का प्रयोग काल के अर्थ में उतना नहीं होता, जितना एक खास प्रकार की 'पतनोन्मुखी और जबदी हुई मनोवृत्ति' के अर्थ में होता है।"[9] यह सच है कि भारत के प्राचीन साहित्य में भी 'मध्यकाल' या 'मध्ययुग' शब्द का प्रयोग नहीं मिलता है I उन्होंने लिखा हैं " 'मध्ययुग' या 'मध्यकाल' शब्द भारतीय भाषाओं में नया ही है। ...इस देश के प्राचीन साहित्य में इस प्रकार के किसी शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। आजकल इस शब्द का प्रयोग एक ऐसे काल के अर्थ

वमें होने लगा है, जिसमें सामूहिक रूप से मनुष्य एक जबदी हुई स्तब्ध मनोवृति का शिकार हो जाता है I"[10] वे आगे योरोपीय मध्यकाल और भारतीय मध्यकाल के बीच बुनियादी पार्थक्य को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं " वस्तुतः यूरोप के इतिहास में जिस समय मध्ययुग का प्रारभ हुआ उस समय भारतीय इतिहास में नवीन उत्साह और नवीन जोश का उदय हुआ था I संस्कृत भाषा ने नयी शक्ति प्राप्त की और समूचे देश में एक नए ढंग की राष्ट्रीयता की लहर दौड़ गयी I आज के भारतीय धर्म, समाज, आचार – विचार, क्रिया-कांड सभी विषयों पर इस युग पर अमिट छाप है I इस काल को और चाहे जो कहा जाय, पतनोंन्मुखी और जबदी हुई मनोवृत्ति का काल नहीं कहा जा सकता I "[11]

डॉ. शर्मा आधुनिकता की शुरूआत में अंग्रेजी राज की भूमिका को एक सिरे से नकार देते हैं। उनका स्पष्ट मानना है कि यदि अँग्रेज न भी आए होते तब भी आधुनिकता का सूत्रपात अवश्य हुआ होता। यही कारण है कि जहां अधिकतर इतिहासकार आधुनिकता की शुरूआत 19 वीं सदी से मानते हैं ,वही डॉ. शर्मा 12 वीं सदी से आधुनिक - काल की शुरूआत मान लेते हैं। हमारे यहाँ हिन्दी साहित्येतिहास के अंतर्गत जो काल विभाजन हुआ है, वह यूरोप के सैद्धान्तिक ढांचे के आधार पर किया गया है | यद्यपि यूरोप में नवजागरण सर्वप्रथम 14 वीं सदी में, इटली में आया, जहां नये वैज्ञानिक अनुसंधान, नये तकनीक आदि का विकास हुआ ।पहली बार यूरोप चर्च के चंगुल से मुक्त हुआ। भारत में यह प्रक्रिया 12 वीं सदी से शुरू हो गई थी। ऐसे में यूरोप के समाज को आधुनिक कहना और भारतीय समाज को मध्यकालीन कहना कहाँ तक उचित है? इस संदर्भ में पुरुषोत्तम अग्रवाल का कथन है - "आरंभिक आधुनिक काल के यूरोप में, 1480 से 1700 के बीच कोई एक लाख औरतें चुड़ैल कह कर सताई गईं और जिंदा जलाई गईं। इस तरह जलाई जाने वाली 'अंतिम चुड़ैलें' होने का 'गौरव' लूथर के जर्मनी की ही हेलेना कर्टिस और एगनेस ओलमंस को प्राप्त हुआ, जिन्हें 1738 में जिन्दा जलाया गया था ।................मध्यकालीन और आधुनिक केवल समय सूचक शब्द नहीं, मूल्याबोधक 'टर्म्स' भी हैं । आधुनिकता के बाद ही समाज प्रबोधन की दिशा में बढ़ता है । 'आधुनिक' की मूल्यपरक व्यंजना के ही कारण, ऐतिहासिक समकालीनता के बावजूद कबीर मध्यकालीन और लूथर आरंभिक आधुनिक कहलाते हैं | व्यापार के विस्तार, मानवकेंद्रित चिंता और चर्च के प्रति असंतोष के उदय के आधार पर यूरोप में मध्य और आधुनिक काल की संधि - वेला चौदहवीं - पन्द्रहवीं सदी में मानी जाती है। मान्यता यह है कि यूरोप तो मध्यकाल की 'जकड़' से चौदहवीं सदी में ही निकल चला था, जबकि भारत समेत बाकी सारी दुनिया इतिहास की चौदहवीं सदी में तो थीं, लेकिन यूरोप की तरह आरंभिक आधुनिक काल में प्रविष्ट हो जाने के बजाय मध्यकाल में ही ठहरी हुई।"[12] उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि जिस यूरोपीय समाज को आधुनिक कहा जाता है, वहां सैकड़ों की संख्या में औरतों को जिंदा जला दिया जाता है, उसी के सामानांतर कबीर, तुलसी, सूर, जायसी, मीरा जैसे कवि मध्यकालीन सामन्तीय रुढियों पर कुठाराघात करते हैं | इस संदर्भ में डॉ रामविलास शर्मा का कथन महत्त्वपूर्ण है -"1550 से 1650 ईसवी तक लगभग 100 वर्षों का समय भारत और यूरोप के इतिहास में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है | यही यूरोप का पुनर्जागरण काल है। इटली में माइकेल एंजेलो जैसे शिल्पी और चित्रकार, इंग्लैंड में शेक्सपियर जैसे कवि और नाटककार इसी युग में हुए। सूरदास और तुलसीदास जैसे कवि भी इस युग में हुए और स्थापत्य तथा संगीत में हिंदी प्रदेश की महान उपलब्धियाँ इसी युग की हैं । यूरोप में यह व्यापारिक पूंजीवाद का युग है और भारत में वहां से अधिक विकसित व्यापारिक पूंजीवाद का युग है, इसीलिए यूरोप के व्यापारी भारत का माल खरीदने यहाँ आते हैं और उसे बाहर बेचकर मुनाफा कमाते हैं। उस समय यूरोप में आधुनिक युग शुरू हो गया और हम भारत में अभी मध्य काल में ही थे, ऐसा सोचना गलत है।"[13]

इस प्रकार डॉ रामविलास शर्मा ने बारहवीं सदी में व्यापारी पूंजीवाद की भूमिका को महत्त्वपूर्ण माना है। जैसे-जैसे व्यापारिक पूंजीवाद का विकास होता है, वैसे-वैसे जनपदों के बीच का अलगाव भी दूर होता चला जाता है। इसके साथ ही समाज का सामंती ढांचा चरमराता भी है। इस संदर्भ में डॉ शर्मा लिखते हैं "११वीं सदी में जनपदों का अलगाव खत्म होने लगता है, जातीय भाषाओं के अभ्युदय के लिए जमीन तैयार होती है। इतिहासकार जिसे मध्य युग की शुरुआत मानते हैं, वह वास्तव में आधुनिक युग की शुरुआत है। इस युग में उत्पादन का पुराना तरीका बना रहता है पर बहुत सा माल उत्पादकों के अपने काम में आने के लिए तैयार नहीं किया जाता वरन् बेचने के लिए तैयार किया जाता है। बिकाऊ माल देश में ही नहीं, विदेश में बेचने के लिए काफी बड़े पैमाने पर तैयार किया जाता है। कारीगरों और व्यापारियों के बड़े वर्ग निर्मित होते हैं।"14 इस प्रकार डॉ शर्मा ने 'आधुनिक काल ' की उस धारणा को एक सिरे से खारिज किया, जो परम्परा से चली आ रही थी।

****

संदर्भ – सूची

1.रविभूषण,रामविलास शर्मा का महत्त्व, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण , पृ. 79
2.शर्मा रामविलास, भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ,2010,पृ. 143
3.डॉ.पाण्डेय मैनेजर, साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ,2005 पृष्ठ 170
4.शर्मा रामविलास, भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2010, पृ. 53-54
5.शर्मा रामविलास, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ – 33
6.शर्मा रामविलास, भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ - 41 |
7.शर्मा रामविलास, भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, 2017,पृ. 22
8.शर्मा रामविलास, हिंदी जाति का साहित्य , राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली,, पृष्ठ – 139
9.द्विवेदी हजारी प्रसाद, मध्यकालीन बोध का स्वरूप, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, , पृ.18
10.वही 12
11.वही 22
12.अग्रवाल पुरुषोत्तम, अकथ कहानी प्रेम की , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली , पृष्ठ - 67 |
13.शर्मा रामविलास , भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश, भाग – 1, किताबघर प्रकाशन , नई दिल्ली , पृष्ठ – 13 (भूमिका से) |
14.शर्मा रामविलास, भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2010, पृष्ठ 141